एक अंजलि, अनेक अंजलियाँ

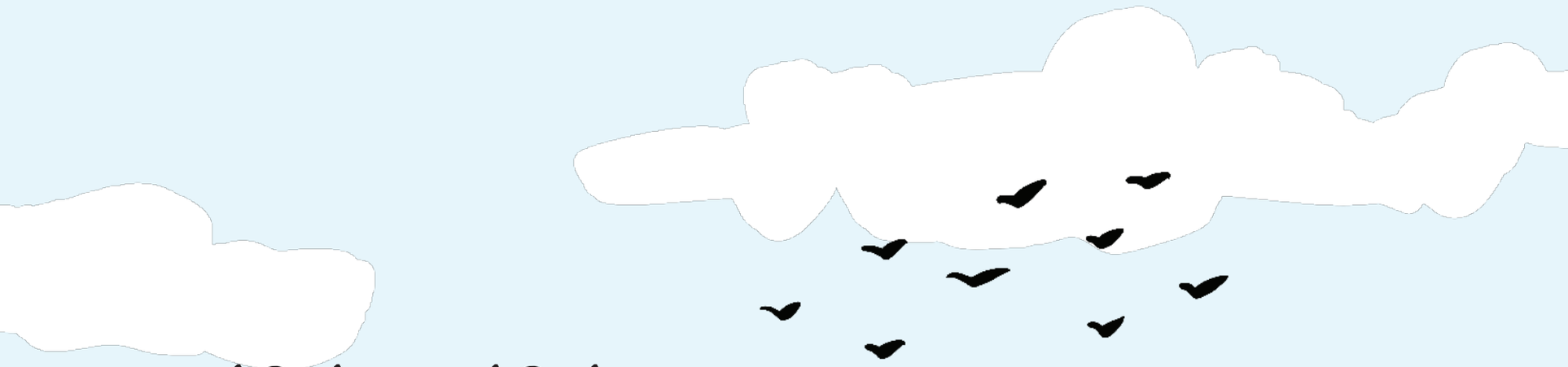

रोकिये न, टोकिये न
पढ़ने दीजिये बेटियों को
सोचिये, समझिये, आगे बढ़ने दीजिये बेटियों को
यदि पढ़ेंगी बेटियां तो खुद के साथ साथ देश का भी
विकास करेंगी बेटियां
अभी जाने कितनी छुपी, दबी हैं
बबिता, सुष्मा, कल्पना, जैसी बेटियां
रोकिये न, टोकिये न
पढ़ने दीजिये बेटियों को।

-अंजलि चौहान
रतनपुरा गांव, मऊ जिला

कला निर्देशक और लेखक पूजा ढींगरा
चित्रकार अंकुर अहुजा

19 साल की अंजलि ने अपने गांव की बबिता, सुष्मा और कल्पना जैसी दबी हुई किशोरियों को अपने घरों से बाहर निकाल कर, न सिर्फ उन्हें एक नयी दिशा दिखाई है, बल्कि एक मुहिम भी छेड़ी है।

अंजलि की वजह से आज यू.पी. के कई गांवों में अनेकों किशोरियां अपनी जिंदगी के साथ-साथ समाज की सोच भी बदल रहीं हैं। लेकिन कैसे? क्या है उनका प्लान?

अंजलि चौहान एक किशोरी दल की लीडर हैं। पिछले कुछ सालों से जेंडर असमानता के मुद्दों पर काम करती आ रहीं हैं। उत्तर प्रदेश के हर कोने में पितृसत्ता को तोड़ने के लिए किशोरियों के समूह बना रहीं हैं।

ये किशोरियां बचपन से अपने घर की औरतों को घर का काम और पुरुषों को बाहर का काम करते देखती आयीं हैं और काफ़ी लक्ष्यहीन रहीं हैं।

मगर अब नहीं...अब यही किशोरियों के समूह अपने और दूसरी किशोरियों के अधिकार के लिए लड़ रहे हैं, बाल विवाह रोक रहे हैं और गाँव के बड़े-बूढ़ों की सोच बदल रहे हैं।

15 साल की पूनम के घरवाले उसकी शादी एक 35 साल के पुरुष के साथ करने जा रहे थे। जब यह बात किशोरी दल को पता चली तो वह तुरंत उसके घर पहुंचीं और शादी रुकवा दी।

उसी गांव की खुशबू पहले अपने घर से निकल नहीं पाती थी। किशोरी दल की लड़कियों ने उसे खेलने के लिए प्रोत्साहित किया। खुशबू ने 100 मीटर दौड़ना शुरू किया। फिर एक दिन वह फ़ैजाबाद में एक प्रतियोगिता में मेडल जीत कर वापस आयी।

ये किशोरी दल जगह-जगह नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जेंडर समानता के मुद्दों पर बात करते हैं - जैसे महिला हिंसा, माहवारी, बाल विवाह आदि।

इन किशोरी दलों की एहमियत इसलिए भी है क्योंकि आंकड़ों के अनुसार जेंडर भेदभाव के कई रूप होते हैं। और यह किशोरियां इन आंकड़ों में परिवर्तन लाने की पूरी कोशिश कर रहीं हैं।

उदया सर्वेक्षण के अनुसार उत्तर प्रदेश में 2015-16 में 15-19 साल की उम्र की 6% किशोरियां किसी भी ग्रुप की मेम्बर रह चुकी थीं। जब सर्वेक्षण का दूसरा राउंड 2018-19 में किया गया, तो 3 साल के अंतराल में सिर्फ 2% किशोरियों ने किसी भी ग्रुप की मेम्बरशिप ली थी।

उदया सर्वे के दूसरे राउंड (2018-19) के मुताबिक, यूपी में 18-22 साल के उम्र की केवल 47% अविवाहित किशोरियों को, यानी आधे से भी कम, कुछ चुनिन्दा जगहों पर अकेले आने जाने की आज़ादी है। 18% लड़कियों का ये भी कहना है कि उन्होंने अपने माता पिता से, भाई की तुलना में, किसी न किसी तरह का जेंडर भेदभाव का अनुभव किया है।

उदया सर्वे के अनुसार 2018-19 में 18-22 साल की किशोरियों में 65% अपने फ़ैसले करने में भागीदारी ले सकती हैं, जबकि 89% किशोरों को ये आज़ादी है। विवाहित किशोरियों में तो यह संख्या और भी कम है – सिर्फ 60%।

बहुत ही सरल उदाहरण के माध्यम से ये किशोरियां ग्रामवासियों की विचारधारा बदल रही हैं।

अंजलि दीदी ने हमें समझाया है कि समता और समानता में अंतर होता है। उदाहरण के तौर पर, घर में दो बच्चे हैं और दोनों को रोज एक गिलास दूध मिलता है। मगर जब एक बच्चा अस्वस्थ हो जाता है तो स्वस्थ बच्चे के दूध के गिलास से थोड़ा सा हिस्सा अस्वस्थ बच्चे को दिया जाए ताकि वह भी ठीक हो जाए और बराबरी में आ सके, तो यह समता है। और जब बराबरी आ जायेगी तो वह समानता है।

एक अंजलि की वजह से आज कई गावों में अनेकों
अंजलियाँ स्वतंत्र सोच का माहौल बना रहीं हैं।
सोच बदलेगी, किशोरियां आगे बढ़ेंगी
तो देश भी बदलेगा...

इस भेदभाव वाले समाज में हम
संगठित हैं क्योंकि एकता में ताक़त है।

साभार:
यह ज़ीन बहनबॉक्स और चित्रकूट कलेक्टिव की पेशकश है। डाटा उदया सर्वे से लिया गया है। यह प्रोजेक्ट पॉपुलेशन कॉउंसिल के उदया ग्रांट से संभव हुआ है।

BEHANBOX
chitrakoot collective
UDAYA TOWARDS ADULTHOOD